

CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN
SURAT.

Manuscripts Library

S. D. P. B.

Coll. No. 673

Title Gītārtha-bodhinī

CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN, SURAT

Shastri Dinmanishankar Pustak-Bhandara

No. : 673 Subject : Puranic lit.

Title : Gītārtha-bodhini

Author : Vāmana Scribe : —

Date of the work : — Date of the Ms. : —

Place of the work : — Place of the Ms. : —

Size : 9.3" by 6.3" Extent : 17 foll.

Language : Marāṭhī Script : Devanāgarī

Remarks : —

गी.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ वामन ॥ ॥ पूर्वाध्यायीं कर्मयोग बोलिला भगवान्
स्वयं ॥ ज्ञानांगत्वे अनादित्वत्याचें बोलत सेहरी ॥ १ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ श्रीभ
गवानुवाच ॥ ॥ इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ॥ विवस्वान्मन
वे प्राहमनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ १ ॥ सम ॥ ॥ चापरातनयोगाते मीसूर्योला
गिं बोलिलों ॥ बोलिला सूर्यमनुला पुत्र इक्ष्वाकुलामनु ॥ १ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ पा
थीसांगितला म्या अव्यय हा जाण योगसूर्यास ॥ सूर्यमनुला कयिलामनुने इक्ष्वाकु
जवर्यास ॥ १ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ यहजोगें हें कस्ये पहिले रविसों जोय ॥ तिनहुं
तबे मनुसों कस्ये मनुईक्ष्वाकुसिकाय ॥ १ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ हा योग कीं पूर्वी ॥ म्या उ
पदेशिलारवि ॥ सूर्यमनुसीदावी ॥ मनुने इक्ष्वाकुसीसांगीनला ॥ १ ॥ ॥ अभंग
॥ ॥ आनंदाचा कंद गोविंद बोलिला ॥ ऐकेया गोष्टीला पूर्वीचीया ॥ १ ॥ पुरातनयोग
मीच आत्मज्ञाहें ॥ बोलिलों ज्ञानहें भानुदेवा ॥ २ ॥ सूर्य होत कार मनुसीसांगतु ॥ तोही
अनुग्रहितु इक्ष्वाकुसी ॥ ३ ॥ ऐसे हें पूर्वीचें आहे भांडवल ॥ सांपडेन वल नुकयासी ॥
॥ ४ ॥ १ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ एवं परंपरा प्राप्त मिमंसा जर्षयो विदुः ॥ सका

लेनेहमहतायोगोनष्टः परंतप ॥ २ ॥ ॥ सम ॥ ॥ परंपरागतअसायोग
 राजर्षिजाणती ॥ तोयोगबहुतांकाळेंअस्तजालापरंतपा ॥ २ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥
 एवंपरंपरागतराजर्षीयोगजाणतीश्रेष्ठ ॥ महतांकाळेंकरुनीहोताजालापरंतपानष्ट
 ॥ २ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ परंपरायाजोगकोंजानतंहेरुखिराय ॥ बहुतदिनबितेग
 येसोउजोगनसाय ॥ २ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ ऋषिपरंपराबोलिला ॥ हायोगजरीं
 ओळखिला ॥ तूंभक्तह्मणूनि सांगितला ॥ अतिअपूर्व ॥ २ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥
 परंपरागतऐसाचिजाणीजे ॥ ऋषीदेवराजेकरवावले ॥ १ ॥ योगतरींअचळपरिजा
 लाचळ ॥ बहुतयुगमूळजाणोनियां ॥ २ ॥ परंतपाअस्तमानागेल्यारवी ॥ प्रकाश
 नुरवीस्वल्पमात्र ॥ ३ ॥ तुकाह्मणोभाग्यभासेसज्जनाचें ॥ जालेप्रकाशाचेंवांटेकार
 ॥ ४ ॥ २ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ सएवायंमयातेऽद्ययोगः प्रोक्तः पुरातनः ॥
 भक्तोसिमेसखाचेतिरहस्यं ह्येतदुत्तमम् ॥ ३ ॥ ॥ सम ॥ ॥ तोचिहा
 आजिम्यातूतेंवर्णिलायोगपुर्विला ॥ तूंसखाभक्तयालागींरहस्याद्भुतबोलिलों ॥ ३
 ॥ आर्या ॥ ॥ भक्तसखातूंह्मणुनीपुरातनतुलाचयोगहाकथिला ॥ ऐकेभारतव-

गी.

र्यापरमनिजरहस्ययुक्तिनेंयथिला ॥ ३ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ वहेपुराणोंजोगमेंता-
 कोंदियोवताय ॥ जातेंतूमीतंहेऔरभक्तनभाय ॥ ३ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ आणि
 म्यातुजबुद्धी ॥ योगसांगीतलाअनादि ॥ तूंसखाभक्तआधीं ॥ ह्मणोनिरहस्यसांगि
 तलें ॥ ३ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ तोचिहाआजीम्यांतुजंप्रगटिला ॥ योगजोलोप
 लापूर्वीहोता ॥ १ ॥ तूंतंवमाझासखाभक्तहिवरिष्ट ॥ ह्मणोनीउत्कृष्टदयाआली ॥
 ॥ २ ॥ नसांगेबंधूतेंनारीसुतादुता ॥ मातापिताचुलतावंचलेम्यां ॥ ३ ॥ अद्भुतरहस्य
 अप्राप्तकरवरा ॥ अतुडलेकरतुकाह्मणे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अर्जुन
 उवाच ॥ ॥ अपरंभवतो जन्म परं जन्मविवस्वतः ॥ कथमेतद्विजानी
 यांत्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥ ४ ॥ ॥ सम ॥ ॥ आलीकडेंतुझेंजन्मसूर्यज-
 न्मपलीकडे ॥ तूंबोलिलासिपूर्वीहेंजाणावेंम्याकशारिती ॥ ४ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥
 जन्मपुरातनरविचाजन्मतुझायादवादिसेअपर ॥ आधींकथिलेंत्वांहेंकैसेंजाणेनसां
 गयाउपर ॥ ४ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ तुमतोप्रगटहोअवेकरजपुरातनदेव ॥ तुमक
 वतासोंकह्योजानोचाहतभेव ॥ ४ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ पार्थह्मणोरुणानाथा ॥ तुझा

अ.

४

जन्म आलीकडे असतां ॥ अनादि सूर्याची कथा ॥ म्यां केंवीं जाणावें ॥ ४ ॥ ॥ अभंग ॥
 ॥ पार्थ ह्मणे माते विस्मय वाटतो ॥ राग आपण तो धरून ये ॥ १ ॥ आलीकडे -
 जन्म तुझा पूत नारी ॥ उसन्न हा पारीं आह्मी जालों ॥ २ ॥ आद्य युगीं रवित्यालागीं सं-
 वाद ॥ वर्णीसी विवाद आह्मापुढें ॥ ३ ॥ आतां चें नेणवे पूर्वीं जाणे कोण ॥ अगीं पावों
 खूण ऐसें करा ॥ ४ ॥ लोक संपादणी तूं तं व त्या पर ॥ उघड विचार तुका ह्मणे ॥ ५ ॥ ४
 श्लोक ॥ ॥ श्री भगवानुवाच ॥ ॥ बहु निमे व्यतीतां निजन्मानि तव
 चार्जुन ॥ तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्स्य परतप ॥ ५ ॥ ॥ सम ॥ ॥
 कमिलीं बहु तें जन्में तुझीं माझीं हि अर्जुना ॥ मी ईश जाणें तीं सर्व तू जीव त्वें न जाण सी
 ॥ ५ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ तुझीं माझीं गेलीं पार्था जन्में बहु त संसारीं ॥ ते तूं नेण सिवा
 पा जाणें सर्व जमीच कं सारी ॥ ५ ॥ दोहरा ॥ ॥ तेरे और मेरे जनम बिते बहु बार
 ॥ तूं तीन को जानत नहिं हो जानत निरधार ॥ ५ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ देव ह्मणे तो तुज
 मज ॥ बहु जन्म जाले सहज ॥ ते सर्व आठवे मज ॥ जीव त्वें तुला नाठवे ॥ ५ ॥ ॥ अभंग
 ग ॥ ॥ बोले नारायण ऐके कुरु नाथा ॥ व्यर्थ न को पंथा संशयाचा ॥ १ ॥ कमिलीं बहु

गी०

जन्में माझीं तुझीं तिही ॥ मी जाण तो पाही ईश पणें ॥ २ ॥ देही तूं अर्जुना नेण सी हे वर्म ॥
 तुका ह्मणे धर्म हाची मुख्य ॥ ३ ॥ ५ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अजोऽपि सन्न व्यया-
 त्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन् ॥ प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममाय-
 या ॥ ६ ॥ ॥ सम ॥ ॥ अजमी अविनाशी मी भूतांचा ईश ही परी ॥ होतों शु-
 द्धात्ममायेने स्वप्रकृति अधिष्ठात्री ॥ ६ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ अज अव्यय भूतेश्वर नि-
 र्गुण जो मी उपाधिला त्या जितो ॥ प्रकृति सि अधिष्ठानियां मायेनें आपणा समी सृजितो ॥
 ६ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ अज अविनाशि प्रगट हो जगत ईश करतार ॥ अपनी इच्छा
 तेल ह्यो सत सुगत अवतार ॥ ६ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ अज अव्यय अवतार ॥ सर्व
 सांचा मी ईश्वर ॥ प्रकृती अधिष्ठान निरंतर ॥ माया धीन जन्म ॥ ६ ॥ ॥ अभंग ॥
 अज ह्मणि जे नित्य अविनाश अस्यीं ॥ भाव शेष शाची जाण वितो ॥ १ ॥ भूतें मज
 पासून कोणा पासून मी ॥ अणु नीम नो कमी पाहें बरें ॥ २ ॥ होतों शुद्ध बुद्ध आत्मैव मा-
 येत ॥ आपुली आकृत अधिष्ठात्री ॥ ३ ॥ तुका ह्मणे हरी सांगेल महात्म ॥ श्रोते हो उत्त-
 म श्रवण कीजे ॥ ४ ॥ ६ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भव

अ०
४

तिभारत ॥ अशुस्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥ ७ ॥ ॥ सम ॥
 जे जे वेळे सधर्माची होत सेहानिभारता ॥ अभिहृष्टि अधर्माची आपणानिर्मितो तयी
 ॥ ७ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ ज्या ज्या समयी धर्म ग्लानी होती अधर्म उद्भवतो ॥ त्या त्या स
 मयी वेगें भारत वर्था जगांत संभवतो ॥ ७ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ जब अर्जुन जगत मे था
 त पर धर्म के भाय ॥ बढत अधर्म जहां तां हांत बहों जनमत आय ॥ ७ ॥ ॥ ओवी
 जे जे काळीं धर्मासी ॥ स्थान भ्रष्टता होय पर्येसी ॥ त्या काळीं अवतरो नित्यासी ॥ दुष्टा
 तें मारित सें ॥ ७ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ जे जे वेळें धर्म हा निपावे क्लेशें ॥ देख दुरारो पें अध
 र्माचेनी ॥ १ ॥ अधर्म उंचावे त्रैलोक्य जीणाया ॥ ते द्वां आत्मकाया सृजी तो मी ॥ २ ॥ तुका
 ह्मणे देव सांगतो ऐकावे ॥ जेणें परा भवे संशय हा ॥ ३ ॥ ७ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ परि
 ब्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ॥ धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि
 युगे युगे ॥ ८ ॥ ॥ सम ॥ ॥ साधूंच्यारक्षणा लागीं माराया पातकी जनां ॥
 स्थापावया सिधर्मा तें होतों युग युगा प्रती ॥ ८ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ साधुनाणक
 रायारवळ दुष्टाचे करावया हनन ॥ धर्मस्थापायासी घेतों पार्था युगा युगीं जनन ॥ ८

॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ साधन कीरछाकरछाकरो पापिन डारो मार ॥ थापतरीत धर्म की
 जुग जुग मां हि विचार ॥ ८ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ पवित्र साधु तारावे ॥ दुष्टा सिनाश करा
 वे ॥ धर्मस्थापन व्हावे ॥ अवतरे युगा युगीं ॥ ८ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ रक्षावया सा
 धुजना ॥ मारावया सी दुर्जना ॥ १ ॥ धर्मस्थापना करावया ॥ होतों युग युगीं कों तेया ॥ २
 हें चि देह धारण मूल ॥ ऐके मम माये चार वेळ ॥ ३ ॥ तुका ह्मणे अफयाचें ॥ दान पात्र भा
 विकाचे ॥ ४ ॥ ८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ जन्म कर्म च मे दिव्य मे वं यो वेत्ति तत्त्वतः ॥
 त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥ ९ ॥ ॥ सम ॥ ॥ अलौकिकें
 जन्म कर्म माझीं जाणें असें रवरें ॥ देहात कुनितो मातें पावे जन्मान ये पुन्हा ॥ १ ॥ ॥ आ
 र्या ॥ ॥ एवं पार्था माझे जाणे जो जन्म कर्म निश्चित रे ॥ देहांतीं जन्म पुन्हा न पवे मज शीं मि
 ळो नितो चित रे ॥ १ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ मरे और जनम करम को तत्व लहे जो जान ॥ देह
 त जे मो को मिले बहु शीन जन मे आन ॥ १ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ माझे जन्म कर्म दिव्य जा
 ण ॥ तया नाहीं जन्म मरण ॥ ते सुण ज्ञानी धरून ॥ ते मज पावती ॥ १ ॥ ॥ अभंग ॥
 माझी जन्म कर्म लीळा ॥ जाणे भाविकु जो भोळा ॥ १ ॥ धन्य तो चि भूमी वरी ॥ देहीं असो नि

निर्विकारी ॥ २ ॥ पदशाश्वतपावेल ॥ अनुपम्यहें गाइल ॥ ३ ॥ खुंदे पुन्हा त्याचा जन्म ॥ अनुभा
वेतुकाराम ॥ ४ ॥ ९ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ वीतरागभयक्रोधामन्ययामासुपाश्रि-
ताः ॥ बहुबोझानतपसा पूता मद्भावमागताः ॥ १० ॥ ॥ सम ॥ ॥ कामक्रो-
धभयातीतध्याननिष्ठमदाश्रित ॥ बहुज्ञानतपें शुद्धमत्स्वरूपासि पावले ॥ १० ॥ ॥
आर्या ॥ ॥ रागभयक्रोधरहितमन्ययते जन्म ले नरसूत ॥ ज्ञानतपें पावत बहुपाव-
ति मजलामदाश्रयें पूत ॥ १० ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ रागक्रोधभयतजे मोमे राखे भाय ॥ ब-
हुतग्यानितपकरी गये मोहि मांजी समाय ॥ १० ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ कामक्रोधभयत्यजि-
ती ॥ माझ्या आश्रयें असती ॥ ममप्रसादें ज्ञान पावती ॥ स्वरूपीं मिळोनीं ॥ १० ॥ ॥ अ-
भंग ॥ ॥ कामक्रोधभयाविण ॥ तोच साधु पूर्ण जाण ॥ १ ॥ ध्याननिष्ठमदाश्रित ॥ त्या-
स आह्मी ह्मणो संत ॥ बहुत ज्ञानतपें शूद्ध ॥ जाणावा तो महासिद्ध ॥ ३ ॥ जे पावले स्वस्वरूपीं
तु कया शरण त्याचि दूरी ॥ ४ ॥ ॥ १० ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ येयथामांप्रपद्यंते तांस्त-
थैव भजाम्यहम् ॥ ममवर्त्मानुवर्त्तते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ ११ ॥ सम ॥ ॥
जे जसे भजती मातें मी तसा फळ तों त्यां ॥ पार्थ मनुष्य सकळ माझ्या मार्गि चि वर्त्तती ॥ ११

गी

आर्या ॥ ॥ जे जेसे भजती तैसें भजतों त्यासि मी पाहा ॥ माझ्या वर्त्मासर्वहि अनुव-
र्त्ते मनुज संघ बापाहा ॥ ११ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ जो मोको जेसे भजे ताहो तैसें फळ देत ॥
अर्जुन नरसब जग मोमे रोमाग गहिलेत ॥ ११ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ जेसे जे मजला भजती
॥ त्यासि मी भजे ते चरिती ॥ माझे मार्गि वर्त्तती ॥ सर्व लोक ॥ ११ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ जे
जे जेसे मातें भजे ॥ मीही नया तैसे साउमजे ॥ १ ॥ जेसा भाव ठायीं माझे ॥ फळें तें वी त्यास हजे
पार्थ मानव सकळ ॥ मम मार्गि चि निरवळ ॥ ३ ॥ वर्त्ततात हें तूं जाण ॥ तुका वंदी त्याचे चर-
ण ॥ ४ ॥ ११ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ कांक्षंतः कर्मणां सिद्धिं यजंत इह देवताः ॥ क्षि-
प्रं हिमानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥ १२ ॥ ॥ सम ॥ ॥ कर्मसिद्धीच इच्छूनी
पूजिती अन्य देवता ॥ कर्मसूळाच्या सिद्धीच लोकीं होती सत्वर ॥ १२ ॥ ॥ आर्या ॥
कर्माची हे सिद्धी इच्छुनियां देवताय जन करिती ॥ मानव लोकीं होती कर्माची सिद्धि जे हिलो
करिती ॥ १२ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ करम सिद्धि किचा करी पूजत देव न लोय ॥ करम न-
किये नर लोक में सिद्धि वेगहि होय ॥ १२ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ जें कर्म सिद्धी होऊनी ॥ चित्त
ठेवी अन्य देव भजनी ॥ मनुष्य लोकीं सणी ॥ सिद्धी होती सत्वर ॥ १२ ॥ ॥ अभंग ॥

अ-

६

अन्यदेवतापूजिता ॥ जेकां कर्मसिद्धिप्रती ॥ १॥ नानाविधमार्गांतरं ॥ ध्यानउपास्यगजरे
 ॥ २॥ कर्ममूले चत्यासिद्धी ॥ नरलोकीं पैविशुद्धी ॥ ३॥ पावेशीघ्रभक्तिभावे ॥ तुकाह्मणेपू
 र्वदैवं ॥ ४॥ १२॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ चातुर्वर्ण्यमयासृष्टं गुणकर्मविभागशः ॥ तस्य
 कर्तारमपि मां वित्त्य कर्तारमव्ययम् ॥ १३॥ ॥ सम० ॥ ॥ चारीवर्णहिम्याके
 ले गुणकर्मे विवंचुनी ॥ त्याचा कर्ता तही कर्ता नव्हेमी जाण अव्यय ॥ १३॥ ॥ आर्या ॥
 गुणकर्मविभागें म्याके ले उत्पन्न वर्ण हे चार ॥ त्याचा कर्ता हीमी जाण अकर्ता करूनि सविचा
 र ॥ १३॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ चारोवरनमैरचे करी गुणकरमविभाग ॥ होयाकों करतार
 हो नहि मोह अनुराग ॥ १३॥ ॥ ओवी ॥ ॥ म्या सृजिले चारी वर्ण ॥ गुणकर्मविभा
 गून ॥ त्याचा कर्ता मी जाण ॥ परी अव्यय असें ॥ १३॥ ॥ अभंग ॥ ॥ विप्रक्षत्रिये वे
 श्यशूद्र ॥ वर्णविभाग चत्वार ॥ १॥ केले इच्छेनी आपुलें ॥ मार्गभिन्नत्वी स्थपिले ॥ २॥ सांभा
 लितों पुनः पुन्हा ॥ असोनि अलिप्त अर्जुना ॥ ३॥ अज अव्यय छंदानें ॥ तुकया जाणतु संधा
 नें ॥ १३॥ ४॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ न मां कर्माणि लिपंति न मे कर्मफले स्पृहा ॥ इति-
 मां यो भिजानाति कर्मभिर्न स बल्यते ॥ १४॥ ॥ सम० ॥ ॥ कर्म न लिपंती

माते कीं न कर्म फळीं स्पृहा ॥ माते जाणें असें तोही बद्ध कर्मां नव्हे कधीं ॥ १४॥ ॥ आर्या
 कर्मा लिप्त नव्हेमी कर्म फळीं कामना न बाधावे ॥ ऐसें जो मज जाणें त्याला कर्मां किं दान बाधा
 वें ॥ १४॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ करमनमों को लगत हे मोहिन फलकी चाह ॥ ऐसें जो मोको
 लखे करमन बाधत तां ॥ १४॥ ॥ ओवी ॥ ॥ कर्मां जाणते पाही ॥ कीं मज कर्म
 इच्छानाहीं ॥ ऐसें जो जाणे कांहीं ॥ कर्मां तो न बाधिजे ॥ १४॥ ॥ अभंग ॥ ॥ क
 र्मे लिपंतीना माते ॥ जरीं माझिये साक्षीतें ॥ १॥ नवल सांगतो अर्जुना ॥ झणें संशयो हा-
 मना ॥ २॥ कर्मसु फळ प्राप्ति आशा ॥ नसे किंचित नरेशा ॥ ३॥ जाणें खुणतो विमुक्त ॥ होय
 तोचि कर्मातीत ॥ ४॥ बद्ध शुभाशुभी नव्हे ॥ तुकावणी त्यागोरवें ॥ ५॥ १४॥ ॥ श्लो
 क ॥ ॥ एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः ॥ कुरु कर्मे वतस्मात्त्वं पूर्वं
 पूर्वतरं कृतम् ॥ १५॥ ॥ सम० ॥ ॥ ऐसें जाणोनि मोक्षार्थी केली कर्मे पुरातनी
 करी कर्म चित्तूतस्मात्केलें जें पूर्वपूर्व जीं ॥ १५॥ ॥ आर्या ॥ ॥ ऐसें जाणुनि कर्मे के-
 लीं पूर्वी लमुमुक्षुच्या नि करे ॥ प्राचीनानी केलीं कर्मे ह्यणऊनि तूं करी नि करे ॥ १५॥ ॥
 दोहरा ॥ ॥ जे चाहत हे मुक्तिको करम करे मनमाय ॥ त्यो हि करम करो सदा पहिल नको

मतपाय ॥ १५ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ ऐसें जाणोनिकरीकर्म ॥ मोक्षइच्छुनिनकरीधर्म ॥
याकारणेंवर्णाश्रम ॥ केलापाहिजे ॥ १५ ॥ ॥ अभंग ॥ ऐसें जाणोनिमुमुक्षीं ॥ कर्मके
लीं पूर्वपक्षीं ॥ १ ॥ कुरुवर्यात्याआधारे ॥ करीकर्मसाचोकारें ॥ २ ॥ केलीं पूर्वजपूर्वजीं ॥ तु
काजयासीनावाजी ॥ ३ ॥ १५ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ किंकर्मकिमकर्मैतिकवयोऽ
प्यत्रमोहिताः ॥ तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामियज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ १६ ॥
॥ सम० ॥ ॥ ज्ञानिहीमोहिलेंकीहेंकैसेकर्मअकर्मही ॥ सांगेनतेंजेंजाणोनीसुखी
अशुभांतुनी ॥ १६ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ कर्मकर्मविचारीं नाहितजेथोरथोरकविराय
तेंकर्मतुलाकथितोपार्थाजेंजाणतांअशुभाजाय ॥ १६ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ कौनअ
करमसकरमकौरहतजुपंडितमोह ॥ सुगतकाजसोइकरममेंकहेदेतहोंतोह ॥ १६ ॥
ओवी ॥ ॥ अकर्मकर्मतेंकोण ॥ कर्मवोळरवावीजाण ॥ आईकतेंसांगेन ॥ अशुभा
तुनिसुखसी ॥ १६ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ येथेंमोहिलेंज्ञानिये ॥ खुणनयेध्यानाशी ॥
१ ॥ कैसेंकर्मअकर्मतें ॥ संशयातेंदर्शवी ॥ २ ॥ जाणुनमीतुजसांगे ॥ अशुभाअंगेसुख
सी ॥ ३ ॥ तुकाह्यणेदिव्यमत ॥ सावधचित्तेंऐकावे ॥ ४ ॥ १६ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥

गी.

कर्मणोह्यपिबोद्धव्यंबोद्धव्यंचविकर्मणः ॥ अकर्मणश्चबोद्धव्यंगहनाक
र्मणोगतिः ॥ १७ ॥ ॥ सम० ॥ तत्त्ववेदोक्तकर्माचेंविकर्माचेंनिषिद्धजें ॥ अकर्मा
चेंहिजाणावेंकर्माच्यागहनागती ॥ १७ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ कर्मकर्मविकर्मजाणा
वींसहिचारसाधूनी ॥ कर्माचीगहनगतीऐसेंकथिलेंसदैवसाधूनी ॥ १७ ॥ ॥ दोहरा ॥
जाकेहियेकरमहेंऔरविकरमसुभाय ॥ सुनिअकरमगतिजेयेगहनकरमकेदाय
॥ १७ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ कर्माचेंज्ञानअसावें ॥ विकर्मतेंओळरवावें ॥ अकर्माचित्त
नद्यावें ॥ कर्मगतीह्यणोनियां ॥ १७ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ तत्त्ववेदोक्तकर्माचें ॥ कर्मत्या
चेंअवधारी ॥ १ ॥ निषिद्धविकर्माचेंजें ॥ तेथेंबुझेसर्वज्ञ ॥ २ ॥ अकर्माचेंहीजाणावें ॥ -
जीवीध्यावेंएकत्व ॥ ३ ॥ तुकावदेकर्मगती ॥ गहनह्यणतीयास्तव ॥ ४ ॥ १७ ॥ ॥ श्लो
क ॥ ॥ कर्मण्यकर्मयःपश्येदकर्मणिचकर्मयः ॥ सबुद्धिमान्मनुष्येषुस
युक्तःकृत्स्नकर्मकृत् ॥ १८ ॥ ॥ सम० ॥ ॥ नबाधेतेंनव्हेकर्मकृष्णार्पणंअ
कर्मता ॥ अकर्मापापतेंकर्मदेखेसर्वज्ञसर्वकृत् ॥ १८ ॥ ॥ आर्या ॥ कर्मअकर्मा
कर्माअकर्मपाहेतयाकळेवर्म ॥ तोबुद्धिवंतयुक्तहिकेलेल्याणेंसमस्तहीकर्म ॥ १८ ॥

अ.
२

॥ दोहरा ॥ ॥ करमनजाजअकरमजेंलखेअकरमनकरम ॥ बुद्धिवंततिनस-
 चकियोमेरेमनकेभरम ॥ १८ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ कर्मतेंचिअकर्मपाहे ॥ अकर्मतेंकर्म
 होऊनिराहे ॥ मनुष्यांतबुद्धिवंतआहे ॥ जोसर्वज्ञसर्वकर्ता ॥ १८ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥
 नबाधेतेंनहेकर्म ॥ मुख्यवर्मतेंऐसें ॥ १९ ॥ अकर्मताकृष्णार्पणीं ॥ सत्यवाणीमानावी
 ॥ २० ॥ अकर्मचिकर्मपावे ॥ हेतोंअवधेंचोरवट ॥ २१ ॥ तुकावदेसर्वकृत ॥ देरवेमातसर्व
 ज्ञ ॥ २२ ॥ १८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ यस्यसर्वसमारंभाः कामसंकल्पवर्जिताः ॥
 ज्ञानाग्निदग्धकर्माणंतमाहुः पंडितंबुधाः ॥ १९ ॥ ॥ सम ॥ ॥ रा
 कूनिकामसंकल्पआरंभीसर्वकर्मजो ॥ ज्ञानाग्निनेकर्मजाळीहणतीतोचिपंडि
 त ॥ १९ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ कर्मरंभजयाचेइच्छासंकल्पवर्जजेप्राज्ञ ॥ कर्मज्ञाना
 ग्निनेजाळितितेजाणपंडितप्राज्ञ ॥ १९ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ ज्याकेसबआरंभनि
 जविनाकामनाहोत ॥ तासोंपंडितकहतस्निदहेकरमकोगोत ॥ १९ ॥ ॥ ओ
 वी ॥ ॥ सर्वकर्मरंभकरी ॥ कामनात्यजूनिअवधारी ॥ ज्ञानाग्निनेदाहकरी
 हणतीतोचिपंडित ॥ १९ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ कामसंकल्पत्यागुनी ॥ आत्म-

७

गी.

ध्यानींरातला ॥ १९ ॥ सर्वकर्मासिजोआरंभी ॥ निर्मलनभींचंद्रमा ॥ २० ॥ ज्ञाना
 ग्निनेजाळीकर्मा ॥ शिवशर्मापेंजेसा ॥ २१ ॥ तोचिपंडितबोलती ॥ तुकास्तुतीक
 रीज्याची ॥ २२ ॥ १९ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ त्यक्त्वाकर्मफलासंगंनित्यतृप्तोनि
 राश्रयः ॥ कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किंचित्करोतिसः ॥ २० ॥ निराशी
 र्यंतचिन्तात्यात्यक्तसर्वपरिग्रहः ॥ शरीरंकेवलंकर्मकुर्वन्नाप्नोति कि-
 ल्विषम् ॥ २१ ॥ ॥ सम ॥ ॥ फलेच्छाटाकुनीसर्वसदातृप्तिनिराश्रय ॥
 प्रवर्तलासर्वकर्मांतहीकांहीनतोकरी ॥ २२ ॥ शरीरचित्तस्ववशानआशानपरि
 ग्रह ॥ शरीरमात्रेंजोकर्मकरीपावेनबंधतो ॥ २३ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ कर्मफला
 तेंत्यागीनित्यतृप्तस्वयेचिअनुभवितो ॥ कर्माप्रवृत्तअसतांनकरीकाहीस्वसौ
 ख्यअनुभवितो ॥ निष्कामतनुमनांशीअवरुनिनिःसंगतेशिजोवरिता ॥ केव
 लतनुसंबंधींकर्मकरुनीनलिंपतोदुरिता ॥ २४ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ करमफ
 लनछोडेसदातृप्तकरेनहिआस ॥ ताकोंकरमनकरतहैलगेनभवकीफांस
 ॥ २० ॥ जीतेंइंद्रिदेहमनकामपरिग्रहजाय ॥ देहकाजकरमनकरतपापनलाग

अ-
४

तताय ॥ २१ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ फलेच्छात्यजी ॥ दस असो नि निराश्रयोजी ॥ प्र-
 कृती कर्मसिंहजी ॥ न बाधिजेला ॥ २० ॥ शरीरचित्तस्ववश करिसी ॥ आशापरिग्र-
 हटाकिसी ॥ शरीरें कर्म करिसी ॥ असान पावे बंधाते ॥ २१ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥
 सर्वदा कूनि फळाशा ॥ स्वात्म तोषाभीतरी ॥ निराश्रय सदा दस ॥ पारंगत सच्छा-
 स्त्री ॥ २ ॥ सर्व कर्म प्रवर्तला ॥ जे साभाला भियिलेश ॥ ३ ॥ तद्दीकांही न तो करी ॥
 साक्षोत्तरी तु कयाचे ॥ ४ ॥ २० ॥ देह चित्त वश्य करुनी ॥ जो साधनी विनटला ॥ १ ॥ परि-
 ग्रह न ते आशा ॥ मद ईर्ष्या नेणेची ॥ २ ॥ शरीर मात्रें जो कर्म ॥ करी धर्म रक्षनी ॥ ३ ॥
 बंधना ते छेदुन वर्ते ॥ लाभ सरते तु कयासी ॥ ४ ॥ २१ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ यद-
 च्छाला भसंतु शो दं द्वाती तो विमत्सरः ॥ समः सिद्धा व सिद्धौ च कृत्वापि
 न निबध्यते ॥ २२ ॥ ॥ सम ॥ ॥ लाभें अयाचिते तुष्ट न जया दं द्मत्सर ॥
 सिद्धां असिद्धांत सम न द्वे बद्ध करुनिही ॥ २२ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ तुष्ट यदच्छा-
 लाभें दं द्हरहित जो विमत्सरी युक्त ॥ ज्याला सिद्धि असिद्धी सम तो कर्म करो निही यु-
 क्त ॥ २२ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ जथाला भसंतो रव जो सुख दुःख न गनत दोइ ॥ सिद्धि

गी.

असिद्धि एक कीं कर मन बंधन होई ॥ २२ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ सुख दुःखा तें न धरी
 लाभालाभींचाडन करी ॥ दं द्वाती त विचारी ॥ तो बंधन पावे ॥ २२ ॥ ॥ अभंग ॥
 लाभ सर्वांसी सारि रवा ॥ तुष्ट देखा अयाचितें ॥ १ ॥ सुख दुःख दं द्द नेणे ॥ मत्सर नेणे भा-
 वेची ॥ २ ॥ सिद्धी असिद्धींत सम ॥ आत्माराम साधका ॥ ३ ॥ बद्ध न द्वे कर्म करितां ॥ तु क-
 या वार्ता निवेदी ॥ ४ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ गत संगस्य मुक्तस्य ज्ञानाव-
 स्थितचेतसः ॥ यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ॥ २३ ॥ ॥
 सम ॥ ॥ कर्तृत्वापासनी मुक्तस्वरूपींचित्तधारलें ॥ यज्ञार्थ आचरे कर्म सर्व-
 तें जात सेलया ॥ २३ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ जो निःसंग विमुक्त ज्ञानी जाचें करी तम
 न निलया ॥ यज्ञार्थ कर्म करितो त्याचीं कर्म हि पावती विलया ॥ २३ ॥ ॥ दोहरा
 तज सवे जो काम नाग्यान लागावे चीत ॥ जग्य काज कर मन करे सो न बाधिये मीत ॥ २३
 ओवी ॥ ॥ कर्तृत्वापासनी मुक्त ॥ भ्रवंड स्वरूपीं जयाचें चित्त ॥ यज्ञार्थ कर्म आ-
 चरत ॥ तेणें तें पावत लयातें ॥ २३ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ कर्तृत्वापासनी मुक्त ॥ जो वि-
 रक्त सर्वदा ॥ १ ॥ थारे चित्त आत्मरूपीं ॥ कींचिदूपीं रेळे तो ॥ २ ॥ मरवार्थ कर्म आचरे ॥ नि

अ.

४

१ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ३ ॥ सर्वज्ञानं ज्ञानं लया ॥ दायीं जया तुकाराम ॥ ४ ॥ २३ ॥ ॥ श्लो
 क ॥ ॥ ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ॥ ब्रह्मैव तेन गं
 तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिना ॥ २४ ॥ सम ॥ ॥ कर्ता अग्निहविर्द्रव्यं ब्रह्म
 ब्रह्मि च अर्पणं ॥ कर्म ब्रह्म समाधिस्थ त्यागं ब्रह्मि च पावणं ॥ २४ ॥ ॥ आर्या ॥
 अर्पणहविर्हुतवन्ही सर्वहिहे ब्रह्म रूपजो मानी ॥ ब्रह्म क्रिया समाधी करुनी ब्रह्मा
 सिपावतो ज्ञानी ॥ २४ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ होम अग्नि के ब्रह्म है अरपी ब्रह्मि जान
 जाई ब्रह्म से सो रहे करम समाधि स्थान ॥ २४ ॥ ॥ ओवी ॥ कर्ता हव्य आग्नि अ-
 ग्नी ॥ होम ब्रह्म जाणोनी ॥ कर्म ब्रह्म समाधिला उनी ॥ ब्रह्मि च पावे ॥ २४ ॥ ॥ अ
 भंग ॥ ॥ कर्ता अग्निहविर्द्रव्यं ॥ जिवे भावे ये काग्र ॥ १ ॥ ब्रह्मि ब्रह्मि च अपूर्ण ॥ जा
 लाली न माझारी ॥ २ ॥ कर्म ब्रह्म समाधिस्थ ॥ चिंताग्नी तसारिखा ॥ ३ ॥ त्यागं ब्रह्मि
 च पावणं ॥ सुख बाणें तु कयासी ॥ ४ ॥ २४ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ दैवमेवापरेय
 जं योगिनः पर्युपासते ॥ ब्रह्माग्नावपरेयज्ञं यज्ञेनैवोपजुहति ॥ २५
 सम ॥ ॥ यज्ञ इन्द्रादि भावें चिकर्मयोगी उपासती ॥ ब्रह्माग्नी तचित्त ज्ञानी यज्ञ

गी

शीती च होमिती ॥ २५ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ कर्म तदैव मखातें करिती वदलों सुयुक्ति
 होमिती ॥ ब्रह्माग्नी चैव ई ज्ञानी यज्ञे करूनि होमिती ॥ २५ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ देव न
 कोई भजत है करे जग्य बहु धाय ॥ एक ब्रह्म मे जजत है ग्यान जोग के दाय ॥ २५ ॥ ॥
 ओवी ॥ इन्द्रातें भावें चिय ज ॥ कर्म योगी उपासिती जाण ॥ ब्रह्माग्नी तचित्त मन ॥
 ज्ञानी यज्ञ शीती च होमिती ॥ २५ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ इन्द्रादि भावें चिय ज ॥ जो
 सर्वज्ञ स्वीकारी ॥ १ ॥ उपासिती कर्म योगी ॥ पुढें भोगी निज मोक्ष ॥ २ ॥ जे कां ज्ञानी ब्र
 ह्माग्नी त ॥ मन चित्त सामर्थी ॥ ३ ॥ यज्ञ शीती च होमिती ॥ तथा प्राप्ती निज लाभ ॥ ४
 तुकाराम ने आणी कही ॥ यज्ञ पाही सांगतु ॥ ४ ॥ २५ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ श्रोत्रा
 दीनीं द्रियाण्यन्ये संयमाग्निपुजुहति ॥ शब्दादीनि विषयानन्ये इन्द्रि
 याग्निपुजुहति ॥ २६ ॥ ॥ सम ॥ ॥ श्रोत्रादि इंद्रियें कोणहीं निग्रहाग्नी
 त होमिती ॥ त्या इंद्रियां गी त कोणहीं अर्थ शब्दादि होमिती ॥ २६ ॥ ॥ आर्या
 संयम च न्हिंत कोणहीं करिती श्रोत्रादि होम चिस दाहा ॥ शब्दादिक विषयांचा करिती
 करणाग्नि ने कुणी दाहा ॥ २६ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ एक जु होम त इंद्रिय न संजम

अ.
४

अग्निस्वरूप ॥ विस्वयन होमत एक ज्जइंद्रिय अग्नि अरूप ॥ २६ ॥ ॥ ओवी ॥
 ॥ ॥ श्रोत्रादिज्ञानेंद्रियें ॥ संयमाग्नींत होमिती तये ॥ शब्दादिक विषये ॥ इंद्रिया
 ग्निषु होमिती ॥ २६ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ ज्ञानेंद्रिय कर्मेंद्रिय ॥ दाहाकरणाचा प्र
 त्यय ॥ येकवटी समुदाय ॥ स्वात्मसत्तेया जकु ॥ १ ॥ पृथकाकारें निग्रह ॥ सोडउनी
 दुराग्रह ॥ करुनी आत्म अनुग्रह ॥ नियमाग्नींत होमिती ॥ ३ ॥ त्या इंद्रियाग्नींत ॥ सा
 वधान याजक होत ॥ वर्ण अर्थ सार हुत ॥ शब्दालागीं होमिती ॥ ३ ॥ तुका ह्मणे संता प्रती
 ॥ जैसी सारांश पद्धती ॥ ऐसे निवेदेशी पती ॥ पार्था प्रती ऐकावें ॥ ४ ॥ २६ ॥ ॥ श्लो
 क ॥ सर्वाणीं इंद्रिय कर्माणि प्राण कर्माणि चापरे ॥ आत्म संयम यो
 गाग्नीं ज्ज्वलति ज्ञान दीपिते ॥ २७ ॥ ॥ सम ॥ ॥ कोण्हीं सर्वां इंद्रि
 यांचीं कर्में प्राणादिकां चिहीं ॥ चित्प्रकाशांत वृत्तीच्या निरोधाग्नींत होमिती ॥ २७ ॥ ॥
 आर्या ॥ ॥ प्राणेंद्रिय कर्मांचा अवधा समुदाय होमितां जळतो ॥ ज्ञानें करुनी को
 णी पेटविती आत्म संयमानळतो ॥ २७ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ जे सब इंद्रिय न के करम-
 और करम सब प्राण ॥ होमत संजम अग्नि न मे प्रकट करे चित ग्यान ॥ २७ ॥ ॥ ओ

वी ॥ ॥ इंद्रिय कर्म प्रधान ॥ कर्म सर्वां सिजाण ॥ संयमाग्नींत होमुन ॥ निरोधाग्नींत हो
 मिती ॥ २७ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ कोणी आईक अर्जुना ॥ गाहे निगम भावना ॥ सर्व
 इंद्रिय स्वाधीना ॥ हेच इष्ट सामग्री ॥ १ ॥ पांच प्राण या देहांत ॥ वागताती आत्म स्थित ॥ सां
 चीं कर्में यथास्थित ॥ तींच हूंकडे निर्मिलीं ॥ २ ॥ आतां वृत्तिने निवृत्ती ॥ पद पाउनी जाली
 तृप्ती ॥ तेथें चिद्गानुचिदासी ॥ व्यापें पृथ्वी आकाश ॥ ३ ॥ तुका ह्मणे तेंच कळा ॥ निरो
 धाग्नीची ज्वाळा ॥ होमिती घन सावळा ॥ आत्म तोडें वर्णितु ॥ ४ ॥ २७ ॥ ॥ श्लो
 क ॥ ॥ द्रव्य यज्ञास्तपो यज्ञा योग यज्ञास्तथापरे ॥ स्वाध्याय ज्ञान य
 ज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ॥ २८ ॥ ॥ सम ॥ ॥ द्रव्य यज्ञ तपो यज्ञ योग यज्ञ
 हि सुव्रत ॥ वेदार्थ ज्ञान ही यज्ञ यत्नशील अनुष्ठिती ॥ २८ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ स्वाध्या
 य मरवासि कोणी करिती ज्ञाना ध्वरासि संन्यासी ॥ योग द्रव्य तपो मय यज्ञा तें हव व्रता
 द्य संन्यासी ॥ २८ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ एक ज जन हे द्रव्य सों एक तप या जोग ॥ ए
 क जु पढन वेद हि ज जे एक ग्यान सों लोग ॥ २८ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ एक द्रव्य वेचि
 ती ॥ त्रिविधें तप करिती ॥ एक योगातें अनुष्ठिती ॥ स्वाध्याय यज्ञ ॥ २८ ॥ ॥ अर्था

धनापासुन अभिज्ञ ॥ देवहिजपितृयज्ञ ॥ होतोचिद्व्ययज्ञ ॥ पैतल्यज्ञ जाणती ॥ १ ॥
 तपोयज्ञतपसाचा ॥ योगयज्ञतोयोग्यांचा ॥ स्रवतवेदार्थाचा ॥ ज्ञानयज्ञहीबोलती
 ॥ २ ॥ यत्नशीलजेपांडवा ॥ अनुष्ठितीस्वात्मदेवा ॥ तुकाह्मणेहेचदेवा ॥ जालेंपूर्णआ
 वडतें ॥ ३ ॥ २८ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अपानेज्ज्वलतिप्राणंप्राणेपा
 नंतथापरे ॥ प्राणापानगतीरुत्वाप्राणायामपरायणाः ॥ २९ ॥
 सम ॥ ॥ अपानीहोमितीप्राणप्राणींतोचिअपानही ॥ प्राणापाननिरोधूनीप्रा
 णायामासितसर ॥ २८ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ प्राणीअपानहोमेंप्राणअपानींकुणी-
 स्वबोधनें ॥ प्राणापानगतीतेंरोधुनिअसतीसमीररोधानें ॥ २९ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥
 होमअपानहिप्राणमोंप्राणअपानहिभाज ॥ प्राणअपानमेंरोकिकेरहतजुहैनरनाह
 ॥ २९ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ अपानहोमितीप्राणीं ॥ अपानीप्राणअर्पुनी ॥ हटयो-
 गहाजाणोनी ॥ यज्ञेयज्ञफलपावती ॥ २९ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ अपानअधस्तुआ
 सनें ॥ साधुनिआधारअधिष्ठानें ॥ तेथेंहोमिजेप्राणें ॥ आत्माहुतीअपानीं ॥ १ ॥ मग
 ऊर्ध्वदशेचित्तगती ॥ स्वाधिष्ठानाचेवरती ॥ मणिपुरांतआहुती ॥ अपानघेतुप्राणात्वा

॥ ३० ॥ कोणीप्राणअपानास ॥ निरोधोनिषट्चक्रास ॥ जिणोनिप्राणायामास ॥ उता
 वेळजालेजे ॥ ३१ ॥ तुकाह्मणेसाधकजनीं ॥ योगमार्गाअनुभवुनी ॥ पंथठेविलानि
 त्यानी ॥ वागावयापांधिका ॥ २९ ॥ ४ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अपरेनियताहा
 राः प्राणान्प्राणेषुज्ज्वलति ॥ सर्वेऽप्येतेयज्ञविदोयज्ञक्षपितकल्मषाः
 ३० ॥ सम ॥ ॥ कोणहीनेमूनिअन्नादिप्राणीप्राणासिहोमिती ॥ हटयोगीअसे
 सर्वयज्ञेपावनयज्ञवित् ॥ ३० ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ कोणहींनियताहारेंप्राणींप्राणा
 सिहोमितीचापा ॥ हेसर्वयज्ञवेत्तेशालितियज्ञेंकरूनियांपापा ॥ ३० ॥ ॥ दोहरा
 प्राणनहिमेप्राणकोहोमतजीआहार ॥ जेसबजातजग्यकोंमेटेपापचिकार ॥ ३०
 ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ अत्यनेमूनिआहारें ॥ प्राणींप्राणनेमितीरवरें ॥ हटयोगीनिधी
 रें ॥ यज्ञेचियज्ञफल ॥ ३० ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ हटूयोगवाटेवान ॥ साधुनिआहा
 रनियमित ॥ तेथेंमनकेंचित्धीत ॥ पिडूशकेलहेनेणे ॥ १ ॥ प्राणींप्राणासहोमिती ॥
 हटयोगीऐसेरीती ॥ सर्वयज्ञपावनहोती ॥ त्याबोलतीयज्ञवित् ॥ २ ॥ तुकाह्मणेना
 ययणें ॥ केळेंपार्थासिसांगणे ॥ नातेंसाधूचेंमागणें ॥ होतेंकांदीपूर्वींच ॥ ३ ॥ ३०

श्लोक॥ ॥ यज्ञशिष्टामृतभुजोयांतिब्रह्मसनातनम् ॥ नायंलोको
 इत्ययज्ञस्यकुतोऽन्यःकुरुसत्तम॥ ३१॥ सम० ॥ ॥ यज्ञशेषकथा
 भोक्तेपरब्रह्माचिपावती॥ अयज्ञालानहालोककैचास्वर्गकुरुत्तमा॥ ३१॥ ॥ आ
 र्या॥ ॥ यज्ञावशिष्टअमृतासेवुनिपावतिसनातनब्रह्म॥ यज्ञावांचुनिकेसें
 लोकदयापावतीलजेब्रह्म॥ ३१॥ ॥ दोहरा॥ ॥ जग्यशेसअमृतभरवेहो
 तब्रह्ममेलीन॥ यहलोकबिनजग्यनहिपरलोकहेछिन्न॥ ३१॥ ॥ ओवी
 यज्ञशेषजेभक्षिती॥ अमृतपानेब्रह्मपावती॥ यज्ञशेषजेनकरिती॥ तयानाहीपर
 लोक॥ ३१॥ ॥ अभंग० ॥ ॥ यज्ञशेषजेअमृत॥ देवादिकज्याइछित॥ त्याचेभो
 केजालेसंत॥ पूर्णहृत्प्रयत्ने॥ १॥ मगयांतलाभकाय॥ ऐसाकोणीपुसताहोय॥ तरीप
 रब्रह्मवाय॥ पैपावतीभरवसें॥ २॥ आतांअळसीपांडवा॥ नसेयाज्यत्वस्वभावा॥
 त्यासीइहलोकबोलावा॥ मानकैसापरचीं॥ ३॥ कुरुउत्तमाअर्जुना॥ चित्तद्यावेया
 वचना॥ कांहींआसत्याकल्पना॥ त्यातूंमातेनिरोपी॥ ४॥ तुकाह्मणेचोरवर॥ जेंजा
 नयज्ञावरिष्ट॥ तेंसेवितातिब्रह्मनिष्ठ॥ सोहंमंत्रेंकरोनि॥ ५॥ ३१॥ ॥ श्लोक

एवंबहुविधायज्ञावितताब्रह्मणोमुखे॥ कर्मजान्विहितान्सर्वानेवंज्ञा
 त्वाविमोक्ष्यसे॥ ३२॥ ॥ सम० ॥ ॥ विस्तारलेबहुअसेयज्ञब्रह्माचियांमुखे
 सर्वकर्मजतेंजाणऐसेंजाणोनिसूटसी॥ ३२॥ ॥ आर्या॥ ॥ एवंबहुविधयज्ञ
 श्रुतिनेंसांगीतलेंअसेस्वमुखे॥ कर्मजअवघेऐसेंजाणुनिहोमुक्ततूंनिजात्मस्वरें॥
 ॥ ३२॥ ॥ दोहरा॥ ॥ बहुभांतवेदनकहेयज्ञसेसबतेमान॥ तेसबजान्योकरम
 तेलहेमुगतसरवरवान॥ ३२॥ ॥ ओवी॥ ॥ ऐसेबहुविस्तारले॥ यज्ञब्रह्मज
 ले॥ सर्वकर्मविस्तरलें॥ हेउमजल्यासूटसी॥ ३३॥ ॥ अभंग॥ ॥ बहुयज्ञा
 चाविस्तार॥ जालाविधिपासनीसाचार॥ सर्वकर्मसारासार॥ ऐसेंजाणुनसूट-
 सी॥ १॥ कर्मीबद्धतापांडवा॥ ह्मणोनजडपणठेवा॥ याचेंसंगेजडजीवा॥ तरुणो
 पायकायसा॥ २॥ ऐसेंकल्पिसीमानसीं॥ ज्ञानीअशंकाविवसी॥ हातींनलगेठे
 व्यासीं॥ पैंगाभूतेंझोंबल्या॥ ३॥ तयाभूतांचीझाडणी॥ करीलयेथेंगदापाणी॥
 पंचाक्षरीतोनिर्वाणी॥ सोडविलेंसोडवी॥ ४॥ तुकाध्यायध्यानाजवळ॥ ज्याची-
 अरवंडितमाळ॥ ह्मणूनसंतामाजीरवेळ॥ जालाब्रह्मप्राप्तीचा॥ ५॥ ३२॥ ॥ श्लोक

दोहरा ॥ ॥ पांडवतुंयाकेलियेंरहियेनहिफिरमोह ॥ सबजीवनकोंदेखिये ॥ आप
मांहिकेंमोह ॥ ३५ ॥ ओवी ॥ ॥ ऐसैंज्ञानजाणितल्याचरी ॥ मगमोहनपावसीलसं
सारीं ॥ आत्मरूपदेखसीचराचरीं ॥ ऐक्यतेसी ॥ ३५ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ जेज्ञा
नजाणुनिचां ॥ पुन्हाऐसामायामया ॥ नमोहसीलकोंतेया ॥ दृश्यभासदिसेना ॥ १
स्थूळसूक्ष्मींजींभूतें ॥ अथवास्थाचरजंगमातें ॥ आत्मरूपतुंयतें ॥ आपणातेंदेख
सी ॥ २ ॥ मगमजसीऐक्यता ॥ होयकेसीऐकेआतां ॥ जेसैंपावकेंकवळीतां ॥ देऐश्व
र्यआपुलें ॥ ३ ॥ गंगासिंधुसमागमीं ॥ कींभानूच्याठाईरश्मी ॥ तेंवीचेकतेथेंनामीं ॥ तु
कानवचेनिराळा ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अपिचेदसिपापेभ्यः सर्वेभ्यः
पापकृत्तमः ॥ सर्वज्ञानलवनेवृत्तिनसंतरिष्यसि ॥ ३६ ॥ ॥ सम
अससीथोरहीपापीपापियांसकळांततूं ॥ तहींयाज्ञाननावेनेतरसीपापसागर ॥
३६ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ मोठापापीअससीजरिपापासीतुझ्यानसेपार ॥
ज्ञानलवघेउनियांजासिलवृत्तिनाब्धिच्याचतूंपार ॥ ३६ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥
सबपापिनमेजोबढोपापीहंजोहोय ॥ ग्याननावचढिउतरेपापसिंधुसमजो

॥ ॥ ओवी ॥ ॥ सकळपापीयामाझारी ॥ थोरपातकीतूंअससीजरी ॥ तरिया
ज्ञाननावेंतनिर्धारी ॥ तरसीपापसागर ॥ ३६ ॥ ॥ अभंग ॥ असलासजरींपापी
यादरीं ॥ नोहेकवणेपरीउद्धारची ॥ १ ॥ थोरपापिभितीऐसीजरींगती ॥ जालीतुज
प्रतीपार्थवीरा ॥ २ ॥ तरीपापसिंधुवरिहेअगाधु ॥ आहेकींनिर्बाधुज्ञाननौका ॥ ३ ॥ तु
काह्मणेसारनिवडीरमावर ॥ श्रवणेचीउद्धारभाविकांचा ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ॥ श्लोक ॥
यथेधांसिसमिद्धोग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ॥ ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणिभ
स्मसात्कुरुतेतथा ॥ ३७ ॥ ॥ सम ॥ ॥ कींजसापेटलाअग्नीकाष्ठेंजाळीज
शींतशीं ॥ ज्ञानाग्निकरितोभस्मसर्वहीपुण्यपातकें ॥ ३७ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ जे
सासमिद्धअग्नीकरितोभस्मक्षणामधेंकाष्टा ॥ कर्मभस्मकरावींज्ञानाग्नीनेंतशीपर
काष्टा ॥ ३७ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ जैसीज्वालहुतासकींडारतसबहीजार ॥ ग्यानअ-
गिनत्योंप्रबलहैडारतसबतेंजार ॥ ३७ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ जैसैंमहाभारइंधन ॥
भस्महोयअग्निसंगेंजाण ॥ सर्वकर्मजाळून ॥ ज्ञानाग्नीदग्धकरी ॥ ३७ ॥ ॥ अ
भंग ॥ ॥ किंवाजैसापेटेवन्हिजाळीकाष्ठें ॥ तेथेंसानेंमोहेंनविचारीची ॥ १ ॥ ते-

सायेकवेळां ज्ञानापी उजळला ॥ जाल्याकर्मकळा मसमकरी ॥ २ ॥ तेथें पाप पुण्य नोळ-
खे स्वरूप ॥ उडवी संकल्प पतंग ते ॥ ३ ॥ तुकामुक्त जाला यामार्गे जोगेला ॥ तो चिया जना
ला उपदेश ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते
तत्त्वयं योगसंस्थिदुःकालेनात्मनि विंदति ॥ ३८ ॥ ॥ सम ॥ ॥ ज्ञानास
मनसे शुद्ध काही तें ज्ञान हा स्वयें ॥ ज्ञाता चि जो योग यत्ने काळें चित्तांत विंब तो ॥ ३९ ॥
आर्या ॥ ॥ नाहीं सम ज्या दुसरे पवित्र ज्ञाना मधे न संकाळें ॥ तें तूं स्वकर्म योगें होउ
निसं सिद्धि पावसी काळें ॥ ४० ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ ग्यान समान तीन लोक में पावन
नहि ओर ॥ जोग साधना जो करेल ह ग्यान की तोर ॥ ४१ ॥ ॥ ओवी ॥ ॥ ज्ञानासा
रिखें पवित्र ॥ आणी कनाहीं सर्वत्र ॥ ते ज्ञान सिद्धि योग करितां निरंतर ॥ ज्ञानें करुनि-
पाविजे ॥ ४२ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ ज्ञानास मनसे प्रायश्चित्त दिसे ॥ शुद्ध जें आपें से देहा
करी ॥ १ ॥ ऐसें न साधन देखती लोचन ॥ सर्व गुणी मान ज्ञानासीच ॥ २ ॥ जाल्याच्या प्र-
यत्ने लाभे योग चिन्हें ॥ मग सिद्धि रत्ने येती हाता ॥ ३ ॥ काळें या चित्तांत अनुभव विंब
त ॥ तुकयाचें हित येवढेंची ॥ ४ ॥ ४३ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं

त्परः संयतेन्द्रियः ॥ ज्ञानं लब्ध्वा परं शांतिमचिरेणाधिगच्छति ॥ ४४ ॥ ॥
सम ॥ ॥ श्रद्धालु तो ज्ञान पावे जो तत्पर जितेंद्रिय ॥ ज्ञान पावोनि जे शांति थोर तो शी-
घ्र पावतो ॥ ४५ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ तत्पर विजितेंद्रिय तो ज्याच्या चित्तीं सदैव विश्वा-
स ॥ ज्ञानें शांतिस पावे वदतों मी कृष्णालु ज चि विश्वास ॥ ४६ ॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ विं-
द्रिय जित श्रद्धा सहित पावे ऐसो ग्यान ॥ ता पायेत त काल ही पावेशांति सुजान ॥ ४७ ॥
॥ ओवी ॥ ॥ ज्ञान पाविजे भक्ति करुनी ॥ इंद्रिये नेमि जे तत्पर होऊनी ॥ ज्ञा-
न निशा पावोनी ॥ थोर त्व पावली ॥ ४८ ॥ ॥ अभंग ॥ ॥ श्रद्धालु तो ज्ञान पा-
वे हें तूं माण ॥ पूर्ण समाधान जया पाशीं ॥ १ ॥ जो कां इंद्रिया तें आणितू हा रितें ॥ आ-
णी ब्रह्मत्वा तें तत्पर जो ॥ २ ॥ ज्ञानास पावनी शांतिस घेउनी ॥ बैसे निगमवनी ह्मणोतु
का ॥ ३ ॥ ४९ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अज्ञश्चाश्रद्धानश्च संशयात्मा विन-
श्यति ॥ नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥ ५० ॥ ॥ सम ॥
॥ ॥ कुडे अज्ञ तसा श्रद्धा ही न संशय बुद्धि ही ॥ त्यांत संशय बुद्धी लान दोर्ही लोक
ना सुख ॥ ५१ ॥ ॥ आर्या ॥ ॥ जो अज्ञ अविश्वासी करि संशय वंत आपुला

श॥ लोकहयनाहीहीं स्वरनाहीं ज्यास संशयमनास ॥४०॥ ॥ दोहरा ॥ ॥
 जो मूरख भ्रष्टा विन ताकों होय विनास ॥ जाकों यह संदेह है सो उलोक निरास ॥४०॥
 ओवी ॥ ॥ श्रद्धाहीन ज्ञानहीन ॥ तें संशय बुद्धी जाण ॥ त्यां दोन्हीं लोक नाहीं-
 जाण ॥ स्वरवत्यांनसे ॥४०॥ ॥ अभंग ॥ ॥ बुडे अज्ञ तेसी अश्रद्धा मान
 सी ॥ बसे जयापाशीं निरंतर ॥१॥ हीन जो संशय बुद्धी तेसी नाहीं ॥ स्वररूप पाहीं स
 र्वकाळ ॥२॥ बुद्धी संशयाची न दों लोकीं रूची ॥ फळ श्रुतिकाची तुका ह्मणे ॥३॥ ४०
 श्लोक ॥ ॥ योगसन्धस्त कर्माणि ज्ञानसंछिन्न संशयम् ॥ आत्म
 वंतं न कर्माणि निबध्नाति धनं जय ॥४१॥ सम ॥ ॥ कर्मयोगांत
 संन्यासी जो शास्त्रें मुक्त संशय ॥ जो आत्मज्ञतया कर्म न बाधिति धनं जया ॥४१॥
 आर्या ॥ ॥ योगें कर्म त्यागी ज्ञानें छेदी च संशया त्याला ॥ जाणें धनं जयातुं क
 र्में बाधिति न आत्मवे त्याला ॥४१॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ मोकों अपै कर्म करे करी संदे
 ह दूर ॥ ग्यानी बधे न करम सोर हे सदा स्वरवमें पूर ॥४१॥ ॥ ओवी ॥ ॥ कर्म
 योगातें करिती ॥ जेशास्त्रें मुक्त होती ॥ आत्मज्ञानातें पावती ॥ धनं जया ॥४१॥ ॥

॥ अभंग ॥ ॥ कर्मयोगांतरी संन्यासाची थोरी ॥ वंद हिजवरीं अम्रपूजों ॥१॥ मुक्त
 जाला दोही नुरे संशय कांहीं ॥ वेदशास्त्राग्वाही पाहुनियां ॥२॥ जो कां आत्मवेसांत या क
 र्मवार्त्ता ॥ न बाधिती चित्ता माजी घेई ॥३॥ तुका ह्मणे मुक्त जाले देहातीत ॥ अधमनेण त
 वायांगेले ॥४॥ ४१॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ तस्मादज्ञानसंभूतं हृत्स्थं ज्ञानासि ना
 त्मनः ॥ छित्वैनं संशयं योगमातिष्ठो निष्ठ भारत ॥४१॥ ॥ सम ॥
 तस्मात्संशय अज्ञानें जो मनीं छेदुनी तया ॥ ज्ञानस्वरुद्धें आणि उठ स्वकर्म करि भारता ॥
 ॥४२॥ ॥ आर्या ॥ ॥ यास्तव अज्ञानानें जो हृदयीं उपजुनि करी महातुद ॥ ज्ञानासी
 नें छेदुनि संशय तो कर्मयोग करि उठ ॥४२॥ ॥ दोहरा ॥ ॥ संदेह जो अग्यानें अ
 पनो अर्जुन आय ॥ ग्यानस्वर्ग सो का दिये जोग करे कीतन ताय ॥४२॥ ॥ ओवी ॥
 या कारणें अज्ञान ॥ हृदयीं उपजे संशय करून ॥ ते ज्ञानें तोडून योग करी ॥४२॥ ॥
 अभंग ॥ ॥ तस्मानू हवेरी संशय संहारी ॥ जो वागे अंतरीं अमंगळ ॥१॥ छेदी ज्ञान
 स्वरुद्धें शीरयाचें वेगें ॥ स्वकर्मतुं अंगें अनुष्ठिपां ॥२॥ तुका विनवणी ऐकावी सज्जनीं ॥ स
 माप्त येथुनी प्रसंगुहा ॥३॥ ४२॥ इति श्रीमन्द गवद्गीतायां श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानयो

गोनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ इति टीकासमस्तोकीचतुर्थ्याध्यायदीपिका ॥ श्रीपा
 र्थसारथीकृतजिोवामनमनोरथी ॥ ४ ॥ इति गीतार्थबोधिण्यां श्रीमद्भगवद्गीताटीका
 यांचतुर्थोऽध्यायः ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ शुभं भवतु ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥